(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

SOCIAL PROBLEMS IN THE FICTION OF KAMTANATH

***Prof Anju Dubey, **Kr Brijesh**

**Research Supervisor, Associate Professor, HOD,*
***Research Scholar,*
DAV (PG) College, Bulandshahr

''कामतानाथ के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याएँ''

****प्रो0 अन्जू दुबे, ** कु0 ब्रिजेश***

**शोध निर्देशिका, एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यक्ष हिन्दी विभाग,*
**शोधार्थी*
डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलिज
बुलन्दशहर

कामतानाथ ने 1961 में कहानी लिखना आरम्भ किया था। उस समय की सामाजिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं थी। देष स्वतंत्र हो चुका था। लोग अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हो चुके थे। भारत देष में उस समय कांग्रेस का षासन था। हिन्दु–मुस्लिमों में सामप्रदायिक दंगे जोर पर थे। षिक्षा का ज्यादा प्रसार–प्रचार नहीं हुआ था। गिने–चुने लोग ही षिक्षा प्राप्त कर रहे थे। समाज में चारों तरफ अषान्ति फैली हुई थी। कामतानाथ ने अपना कथा साहित्य मध्यम वर्ग को केन्द्र में रखकर लिखा है।

लेखक का वर्तमान के प्रति जीने का पूरा आग्रह है। इसी विचारधारा के अनुसार लेखक ने सामाजिक परिवेष के यथार्थ का चित्रण किया है। आज की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थितियों के बीच धड़कती बिलखती जिन्दगी के पल–पल बदलने वालें पलों पर अपनी लेखनी चलाई है। कामतानाथ ने साधारण व्यक्ति की मानसिक यातना से व्यथित होकर ही उसे पूर्णतः साहित्य

(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

में स्थान दिया है। कामतानाथ ट्रेड यूनियन के कार्यकर्त्ता होने के कारण साधारण दृश्टि से उपेक्षित, आम–आदमी, मजदूर वर्ग का चित्रण किया है।

लेखक ने जिस तीस–चालीस सालों में अपना साहित्य लिखा है उस समय मध्यवर्ग आंतरिक झगड़ों से हारकर जर्जर हो गया था। आर्थिक विपन्नता के जहरीलें धुएँ में सभी जीने के लिए विवष हो गए थे। इस जहरीले माहौल में जिन तत्वों को पूर्णता प्राप्त हुई उनमें स्वार्थ, द्वोश, अन्धविष्वास की भावना उल्लेखनीय है। लेखक के सभी पात्र भी कहीं न कहीं इन तत्वों से प्रभावित दिखाई देते हैं। उनका समस्त साहित्य आज की विशय परिस्थितियों की देन है।

प्रत्येक पीढ़ी के अपने समय में नए विचार होते हैं। इसलिए अगली पीढ़ी के विचार पिछली पीढ़ी पूरी तरह अलग ही होते हैं। पुराने लोग ये चाहते हैं कि हमारे बच्चें हमारी इच्छानुसार चले, जबकि नई पीढ़ी पुराने विचारों को छोड़कर नये विचारों का अनुसारण करना चाहती है, जिससे दो पीढ़ीयों के बीच संघर्श षुरू होता है। कामतानाथ की कहानियों और उपन्यासों में भी इस स्थिति का चित्रण मिलता है।

'सुबह होने तक' उपन्यास का सूरज अपने पिताजी द्वारा दिए गए अच्छे संस्कारों के बावजूद भी गलत रास्ते को अपनाता है। उसकी गलत आदतों को छोड़ने के लिए पिताजी उसे बार–बार समझाते हैं लेकिन जब भी पिता जी उसे समझाते थे तब ही उसने पिता जी की बातों को नजरअंदाज कर दिया। उसे ऐसा लगता है कि पिता जी अब बूढ़े हो गए हैं उनके जमाने और आज के जमाने में काफी अंतर है। पिता जी पुराने विचारों के है। वह अपनी ही धुन में मस्त आवारागर्दी करता है और अंत में हत्या के अपराध के जुर्म में कोर्ट उसे फाँसी की सजा सुनाती है। अगर उसने अपने पिता की बात मानी होती तो आज ये दिन देखना नहीं पड़ता।[1]

'तुम्हारे नाम' उपन्यास का लेखक रीता से बहुत प्रेम करता था, उससे षादी करना चाहता है लेकिन अपने माता–पिता के पुराने विचारों के रीता और नायक षिकार हो जाते हैं। बैंक में बहुत अच्छी नौकरी होने पर भी दोनों को भाग कर षादी करनी पड़ती है लेकिन उसका अन्त कुछ और ही होता है। नायक अपने दोस्त विजय के पास जाता है जहाँ पर उन दोनों को एक बच्चा भी होता है लेकिन धीरे–धीरे नायक रीता और विजय के सम्बन्धों को षक की नजर से देखता है। रीता अपने ऊपर नायक के अविष्वास के कारण आत्महत्या कर लेती

(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

है और अपराध में नायक जेल काटता है। अगर उन दोनों के परिवार वाले आपसी रजामन्दी और खुषी से उनकी षादी कर देते तो उन्हें इन परिस्थितियों से गुजरना ही नहीं पड़ता है।[2]

'पिघलेगी बर्फ' उपन्यास का नायक अपने पिता के रोज के तानों से तंग आकर एक दिन घर छोड़कर भाग जाता है। पिता जी के अहंकारी और जिद्दी स्वभाव के कारण जिन्दगी उसे कहाँ से कहाँ ले जाती है। उसे लाहौर से तिवेट तक की यात्रा करनी पड़ती है, और दर–दर भटकने को विवष करती है लेकिन जिस चीज के लिए उसने घर छोड़ा था वह उसे नहीं मिलती है। जिन्दगी से हताश नायक अपने आपकों इसका जिम्मेदार मानता है।[3]

'संक्रमण' कहानी में पिता–पुत्र के बीच चल रहे द्वन्द को दिखाया गया है। न ायक के पिता पुराने विचारों के हैं, हर बार वह हमने ऐसा किया, वैसा किया, हमारे समय में ऐसा नहीं होता था ऐसा रटी–रटाई बातें अपने बच्चों को बताते रहते हैं लेकिन पिता जी की प्रत्येक दिन की पुरानी बातों से बेटा परेषान था। पिता जी चाहते थे जो चीज जैसी है वह वैसी ही रहे तो बेटा इसका उल्टा सोचता था। बेटा पुराने विचारों को छोड़कर आधुनिक बनना चाहता था। पुराने विचार, पुरानी बातें कश्टप्रद लगती हैं लेकिन कोई भी एक दूसरे को समझना नहीं चाहता है ये दो पीढ़ियों के बीच चल रहा टकराव ही तो है।[4]

मानवीय मूल्यों का पतन हमें सन 1962 में लिखी 'चक्कर' कहानी में देखने को मिलता है। यह कहानी कॉलेज में पढ़ाई करने वाले लड़कों पर केन्द्रित है। षंकर और दुश्यन्त बहुत अच्छे दोस्त थे, दोनों ही पढ़ाई के चलते घर से दूर रहते थे। दुश्यन्त एक लड़की से प्रेम करता था जो नगर के जिलाधीष की बेटी थी। उसे प्राप्त करने के लिए दुश्यन्त क्या कुछ नहीं करता है यहाँ तक कि वह षमषान भूमि में जाकर बैठने से भी नहीं डरता है, लेकिन प्रेम कोई जबरदस्ती हासिल करने वाली चीज नहीं है लेकिन प्रेम आज की युवा पीढ़ी के लिए बस फैषन ही बन गया है। जिसे पाने के लिए वे कुछ भी करने को तैयार है।[5]

'वह' कहानी आदमी की अकर्मण्यता को अभिव्यक्त करती है। किस प्रकार परिवार का प्रमुख पुरूश जो पति और पिता है। अपने कर्त्तव्यों से दूर भागता दिखाई पड़ता है उसे न तो अपने बच्चों की ही चिन्ता है और न ही अपने परिवार की। बस षराब के नषे में धुत्त रहता है।6

(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

'षव यात्रा से पहले' कहानी का नायक अपने पिता की मृत्यु के बाद उनके ही षव के पास बैठकर सिगरेट पीता है। 'मेहमान एक्ट' कहानी में मेहमान के प्रति रोश प्रकट होता है।[7]

सामान्यतः एक बात स्पश्ट है कि, जो प्रेम, ममता, आदर, अपनापन मानवीय मूल्य हुआ करते थे उनकी जगह अब, लालच, ईर्श्या, द्वेश ने ले ली है। आज हर कोई एक–दूसरे से ईर्श्या करने लगा है। अपना परिवार भी इनसान को आज बोझ सा लगने लगा। माता पिता के प्रति अपना कर्त्तव्य लोग भूलने लगे है। इन कहानियों के अध्ययन करने से हमें यह पता चलता है कि आज के षहरीकरण, आधुनिकीकरण गलत संगत आदि के कारण मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है।[8]

कामतानाथ ने अपने कथा साहित्य में मध्यवर्ग की प्रत्येक पल मरती अभिलासाओं को अभिव्यक्त कर उनकी आत्मिक झटपटाहट को मार्मिक रूप में व्यक्त किया है। मध्यमवर्गीय आडंबरों और विशमताओं को व्यक्त करने की प्रवृत्ति इनके समस्त साहित्य में दिखाई पड़ती है।

'निमाईदत्ता की त्रासदी' में मध्यवर्गीय जीवन का अंतर्विरोध दिखाई देता है। निमाईदत्ता की पत्नी की मृत्यु हो जाती है जो कैंसर से पीढ़ित होती है। मृत्यु के समय उसका बेटा छोटा होता है लेकिन बेटे के पालन पोशण की चिन्ता को लेकर निमाईदत्त दूसरी षादी के प्रस्ताव को ठुकरा देते है। जिस बेटे के लिए उन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी दाव पर लगा दी है वही बेटा अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद विदेष में नौकरी करने लगता है और अपने पिता जी के बिना पूछे ही अपनी षादी भी कर लेता है, इस बात का पता जब उनको चलता है तो उन्हें बड़ा दुःख होता है, लेकिन बेटे की खुषी में अपनी खुषी मान लेना निमाईदत्ता का स्वभाव बन जाता है। बढ़ती उम्र और नौकरी से अवकाष ग्रहण करने के बाद निमाईदत्ता अकेलेपन के षिकार हो जाते हैं। अकेलापन उन्हें काटने लगता है और उसी में उनकी मृत्यु हो जाती है। मध्यवर्ग की यह विडंबना है कि बुढ़ापे में परिवार के बीच रहते हुए आदमी को अकेलापन महसूस होता है क्योंकि बढ़ती उम्र में उन्हें जिस दया व सहानुभूति की अपेक्षा रहती है वह उनको नहीं मिल पाती है और आदमी दिन पे दिन कमजोर होता चला जाता है।[9]

'इक्कीसवी सदी की षोक कथा' में माँ की मृत्यु के बाद अन्तिम क्रिया कर्म में भी षामिल नहीं होना चाहते हैं। किसी की परीक्षा है तो किसी को विदेष

(MIJ) 2019, Vol. No. 5, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

में नौकरी मिल गयी है जो माँ रात–दिन अपने बच्चों के लिए जीती थी उसकी मृत्यु पर बच्चे रोते भी नहीं है।। आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण बच्चों का अपने माता–पिता के प्रति उत्तरदायित्व खो ही गया है। अब तो सिर्फ दिखावा रह गया है। यह तो मध्यवर्ग का अंतर्विरोध है जिसमें प्रत्येक मुनश्य अस्तित्व के लिए जी रहा है। सिर्फ नाममात्र के लिए रिष्ते–नाते निभाए जा रहे हैं, उसमें न ममता है, न प्रेम है और न ही सहानुभूति है। हर कोई बोझ सा लगने लगा है। कामतानाथ ने इस मध्यवर्ग के यथार्थ को स्पश्ट किया है।[10]

नारी सम्बन्धी भिन्न–भिन्न समस्याओं का विष्लेषण किसी सुझाव की मांग नहीं करता अपितु एक विष्लेषण ही अपने आप में इतना महत्वपूर्ण है कि पाठक उसकी ओर आकर्शित हुए बिना नहीं रह सकता है। कामतानाथ के कथा साहित्य में नारी मन की छोटी–छोटी उलझने और अस्त–व्यस्त सी लगने वाली घटनाएँ अत्यन्त स्वभाविक रूप में व्यक्त हुई। कहानी और उपन्यासों के व्यापक क्षेत्र में नारी सम्बन्धी नयी दृश्टि अत्यन्त गहरी और तीक्ष्ण है।

'डायरी के पृश्ठ और एक पत्र' कहानी की नायिका परवीन और निकहत सुबह षाम खाना पकाना, पूरे दिन बच्चों को सम्भालना, पति की हर बात मानना अर्थात हाँ में हाँ मिलाना सास के ताने सुनना, इस तरह की पुरानी प्रथाओं से चिढ़कर षादी न करने का फैसला लेती है। वह पुरानी प्रथाओं को छोड़कर स्वतंत्र अस्तित्व बनाना चाहती है लेकिन परिवार के जिद के आगे उन्हें झुकना पड़ता है। इससे स्पश्ट है कि नारी स्वतन्त्र होना चाहती है लेकिन परम्पराओं में जकड़ी इस व्यवस्था में वह स्वतन्त्र नहीं हो सकती है।

'पत्थरों पर लिखी कहानी' की नायिका पुरूश की हवस का षिकार होने से पहले अपने सतीत्व की रक्षा करते हुए आत्मसमर्पण करना स्वीकार करती है लेकिन अपने सतीत्व की लाज नहीं जाने देती है।

कामतानाथ ने बड़ी सहजता से नारी के भिन्न–भिन्न रूपों को चित्रित किया है नारी दषा का चित्रण उन्होंने समस्याओं की नजरों से नही अपितु साधारण नारी को ध्यान में रखकर किया है। नारी मन की अछूती अनुभूतियों एवं संवेदनाओं का चित्रण उन्होंने खुलकर किया है।

अकेलापन एक ऐसी समस्या से जिसमें इन्सान परिवार के बीच रहते हुए भी खुद को अकेला महसूस करता है। आज की इस भाग–दौड़ भरी जिन्दगी में इन्सान के पास खुद के लिए भी समय नहीं होता है। लोगों के बीच रहते हुए

भी वह अकेला है। अपने मन की बात किसी के साथ भी वह खुलकर नहीं बताता, हर कोई अपने काम में इतना व्यस्त है कि किसी के भी पास इतना समय नहीं होता है कि षान्ति से बैठकर एक दूसरे के मन की बात जान सके। ताकि अपने को अकेला महसूस न कर सके।

औद्योगीकरण, षहरीकरण, आवास की समस्या ने व्यक्ति को इतना मजबूर कर दिया कि अपने माता–पिता जिन्होंने पूरी जिन्दगी अपने बच्चों पर न्यौछावर कर दी उन्हें अपने माता–पिता बोझ लगने लगते हैं। जिस समय इन्सान को सहानुभूति और सहारे की सबसे ज्यादा आवष्यकता होती है, उस समय उनको नजरअंदाज कर दिया जाता है तो इन्सान अकेलेपन का षिकार हो जाता है। कभी–कभी तो अकेलापन इतना बढ़ जाता है कि इन्सान या तो गलत रास्ता अपनाता है, बीमार हो जाता या मृत्यु का वरण करता है।

'दीवारें' कहानी की नायिका को अपना दर्द बाँटने के लिए घण्टों तक दीवारों से बातें करती हैं। पहले तो उसे ऐसा लगता था दीवार उसे काटने को दौड़ती हो। दीवार से उसका पाँच साल का नाता है क्योंकि वह बीमार है। उसका खाना–पीना, हँसना–रोना सब दीवारों के घेरे तक ही सीमित रहता है। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए वह दीवारों का सहारा लेती थी। कई–कई घण्टे बैठकर अपनी मन की बात दीबारों से करती रहती थी, वरना उसका अकेलापन उसे काटने लगता। इन्सान कितना भी अपने अकेलेपन को भूलना या दूर करना चाहे लेकिन वही उसका साया बनकर उसके सामने आता है, इसलिए जरूरी है कि जिस वक्त इन्सान को सहारे की जरूरत हो उसे सहारा दें सहानुभूतिपूर्वक उसके दुःख–दर्द को बाँट सके ताकि वह खुद को अकेला महसूस ना कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. *राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य का मनोविष्लेशणात्मक अध्ययन, डॉ0 सोनिया सिरसाट, विद्या प्रकाषन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2004 पृ0 11*
2. *'रिष्ते–नाते', कामतानाथ, सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2 भावना प्रकाषन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009 पृ0सं0–108*
3. *राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य का मनोविष्लेशणात्मक अध्ययन, डॉ0 सोनिया सिरसाट, विद्या प्रकाषन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2004 पृ0 36*

4. *'तुम्हारे नाम' कामतानाथ, जनवाणी प्रकाषन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003 पृ0सं0: 181*
5. *'सुबह होने तक' कामतानाथ, जनवाणी प्रकाषन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984, पृ0सं0: 178*
6. *हिन्दी कहानी में युगबोध, डॉ0 मंजुलता सिंह, विद्या प्रकाषन कानपुर, प्रथम संस्करण 2007 पृ0सं0: 152*
7. *'निमाईदत्ता की त्रासदी, कामतानाथ सम्पूर्ण कहानियाँ भाग–2 भावना प्रकाषन दिल्ली प्रथम संस्करण 2009 पृ0सं0: 494*
8. *'आत्मसंरचना' कामतानाथ, पुस्तक संस्थान, कानपुर, प्रथम संस्करण 1984, पृ0सं0: 178*

REFERENCES

1. Rajendra Yadav ke Katha Sahitya ka Manovishleshanatmak Adhyayan, Dr Sonia Sirsat, Vidya Publication, Kanpur, First Edition-2004, pg 11
2. "Rishte-Naate" Kamtanath, Sampoorn Kahaniya, Part-2, Bhawana Publication, Delhi, First Edition 2009, pg 108
3. Rajendra Yadav ke Katha Sahitya ka Manovishleshanatmak Adhyayan, Dr Sonia Sirsat, Vidya Publication, Kanpur, First Edition-2004, pg 36
4. "Tumhare Naam" Kamtanath, Janvani Publication, Delhi, First Edition 2003, pg 181
5. "Subah Hone Tak" Kamtanath, Janvani Publication, Delhi, First Edition 1984, pg 178
6. Hindi Kahani me Yugbodh, Dr Manjulata Singh, Vidya Publication, Kanpur, First Edition 2007, pg 152
7. "Nimaidatta Ki Trasdi", Kamtanath, Sampoorn Kahaniyan, Part-2, Bhawana Publication, Delhi, First Edition 2009, pg 494
8. 'Atmasanrachna' Kamtanath, Pustak Sansthan, Kanpur, First Edition 1984, pg 178